Volume: 4 Issue: 10 Pages: 153-156

बिलासपुर जिले में मिशन की गतिविधियां

*[1] डॉ. रश्मि सोनी

*[1] शिक्षिका, शासकीय प्राथमिक शाला बिरकोना, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (SJIF): 6.876
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 12/Sep/2025
Accepted: 10/Oct/2025

***Corresponding Author**
डॉ. रश्मि सोनी
शिक्षिका, शासकीय प्राथमिक शाला
बिरकोना, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

सारांश:
छत्तीसगढ़ में डिसाइपल चर्च ऑफ क्राइस्ट का कार्य बिलासपुर से ही प्रारंभ हुआ। इस सोसायटी के अंतर्गत भारत में धर्म प्रचार के लिए, मुख्यतः शिक्षा संबंधी प्रचार के लिए, मिशनरी भारत वर्ष भेजे गये । सन् 1882 में इनका भारत आगमन हुआ तथा उन्होंनें मध्य प्रदेश के हरदा नामक स्थान में अपना मिशन केन्द्र स्थापित किया। हरदा के पश्चात् जबलपुर में इनके द्वारा एक बाइबिल स्कूल की स्थापना की गई । कुछ समय के पश्चात् जबलपुर डिसाइपल चर्च ऑफ क्राइस्ट का मुख्यालय बन गया। सन् 1883 में इसी सोसायटी द्वारा भेजे गये मिशनरियों का एक दूसरा दल भारत आया जिसनें महोबी, कुलपहाड़ पासी आदि स्थानों में अपने मिशन केन्द्रों की स्थापना की। अकाल के समय लोग अपने बच्चों को मिशन केन्द्रों के पास छोड़ जाया करते थे। कुछ इन अनाथ केन्द्रों में इन बच्चों की परवरिश के साथ-साथ धर्म परिवर्तन भी होता था। इस मिशन के द्वारा लड़कियॉ तथा लड़कों के लिए अलग अलग पाठशाला की भी स्थापना की गई। शिक्षा के प्रसार के साथ ही स्कूलों की संख्या में वृद्धि की जाती रही । प्रायमरी स्कूल मिडिल स्कूल, तथा मिडिल स्कूल हाई स्कूल में परिवर्तित होता चला गया।

मुख्य शब्द: बिलासपुर, मिशन की गतिविधियां, डिसाइपल चर्च ऑफ क्राइस्ट

प्रस्तावना:

बिलासपुर जिला मध्यप्रदेश के पूर्व में स्थित राज्य का एक प्रमुख जिला तथा बिलासपुर संभाग का संभागीय मुख्यालय है। यह जिला 81‘12 से 83.40’ पूर्वी देशांतर रेखाओं के और 21.37 से 23.6 उत्तरी अक्षांशो के मध्य स्थित है। क्षेत्रफल की दृष्टि से प्रदेश के 43 जिलों में इसका चैथा स्थान है । इसकी सीमायें पूर्व में रायगढ़ जिले, उत्तर में सरगुजा, उत्तर पश्चिम में शहडोल, पश्चिम में मण्डला, दक्षिण पश्चिम में दुर्ग तथा दक्षिण में रायपुर जिला को स्पर्श करती है।

मिशन का प्रवेश

बिलासपुर में जर्मन इवेंजिकल चर्च ऑफ अमेरिका, अमेरिका इवेंजिकल चर्च तथा डिसाइपल चर्च ऑफ क्राइस्ट का कार्य प्रारंभ हुआ। मिशन कार्य सन् 1885 में एम. डी. एडम्स के नेतृत्व में प्रारंभ हुआ। इस समय जिला मुख्यालय होने के बावजूद बिलासपुर का समुचित विकास नहीं हो पाया था। अकाल के कारण लोगों की स्थिति काफी दयनीय थी। सरकारी राहत कार्य अपर्याप्त थे। जर्मन इवेंजिकल का कार्य 1868 में ही फादर लोर के नेतृत्व में प्रारंभ हो गया था । इस मिशन का फैलाव रायपुर के साथ ही विभिन्न स्थानों में प्रारंभ हो चुका था। विश्रामपुर ईसाई मिशनरियों को ट्रेनिंग देने का एक केंद्र बन गया था। विदेशों से आने वाले मिशनरी पहले यहां हिंदी तथा मिशनरी कार्यों का प्रशिक्षण प्राप्त करते थे। तत्पश्चात् उन्हें विभिन्न स्थानों में भेजा जाता था। इस मिशन का योग्य मिशनरी प्रशिक्षण के बाद ही बिलासपुर भेजा गया होगा। यद्यपि मिशनरी का नाम प्राप्त नहीं होता। यह आश्चर्य जनक प्रतीत होता है कि छत्तीसगढ़ में मिशन का श्रीगणेश करने वाले जर्मन इवेंजिकल क्लीसिया का कार्य यहां नही के बराबर है। उपलब्ध स्रोतों में इसका उल्लेख भी प्राप्त नहीं होता। संभवतः रायपुर तथा अन्य स्थानों में मिशन केन्द्र स्थापित हो जाने के क ारण इस मिशन ने यहां समुचित ध्यान नहीं दिया हो । यह भी हो सकता हे कि इस मिशन की दृष्टि से उस काल में बिलासपुर का कोई विशेष महत्व न रहा हो। बिलासपुर को जिला मुख्यालय बने भी अधिक दिन नहीं हुआ था तथा रतनपुर राजधानी के समक्ष बिलासपुर उभरता हुआ नाम था।

जहाँ तक डिसाइपल चर्च ऑफ क्राइस्ट का प्रश्न है, 1885 के पूर्व छत्तीसगढ़ के अन्य देशों में इसकी गतिविधियों का उल्लेख प्राप्त नहीं होता। संभवतः छत्तीसगढ़ में इनका कार्य बिलासपुर से ही प्रारंभ हुआ। 19 वीं शताब्दी के अंतिम चरण में संयुक्त राज्य अमेरिका में विदेशों में धर्म प्रचार के लिए मिशनरियों को भेजने की होड़ चल रही थी। इस कार्य के लिए विभिन्न संगठनों की स्थापना की जा रही थी। सन् 1880 में अलबर्ट नार्टन तथा जार्ज वार्टन के नेतृत्व में फारेन क्रिश्चियन मिशनरी सोसायटी की स्थापना अमेरिका में की गई । इस

सोसायटी के अंतर्गत भारत में धर्म प्रचार के लिए, मुख्यतः शिक्षा संबंधी प्रचार के लिए, मिशनरी भारत वर्ष भेजे गये। सन् 1882 में इनका भारत आगमन हुआ तथा उन्होंनें मध्यप्रदेश के हरदा नामक स्थान में अपना मिशन केन्द्र स्थापित किया। हरदा के पश्चात् जबलपुर में इनके द्वारा एक बाइबिल स्कूल की स्थापना की गई । कुछ समय के पश्चात् जबलपुर डिसाइपल चर्च ऑफ क्राइस्ट का मुख्यालय बन गया । सन् 1883 में इसी सोसायटी द्वारा भेजे गये मिशनरियों का एक दूसरा दल भारत आया जिसनें महोबी, कुलपहाड़ पासी आदि स्थानों में अपने मिशन केन्द्रों की स्थापना की।

जबलपुर से इनका आगमन सड़क मार्ग द्वारा बिलासपुर हुआ। उन दिनों जबलपुर से बिलासपुर का मार्ग घने जंगलों से भरा हुआ था। मिशनरियों ने अपनी यात्रा बैलगाड़ी द्वारा शिकार करते हुये पूरी की । बिलासपुर पहुँचने पर उन्होनें सर्वप्रथम जरहाभाठा में अपना तंबू डाला था। कुछ समय विश्राम करने के पश्चात् इन्होनें बिलासपुर की परिस्थितियों का अध्ययन किया।

बिलासपुर में भीषण अकाल के कारण अकाल पीड़ितों को राहत देते हुये सेवा कार्य प्रारंभ करने का निश्चय किया गया। कन्या अनाथालय तथा सड़कों का अनाथालय अलग अलग स्थानों में स्थापित किया गया। उन दिनों वर्तमान बर्जेस स्कूल में कन्या अनाथालय तथा जरहाभाठा में लड़कों का अनाथालय स्थापित किया गया था। अकाल के समय लोग अपने बच्चों को मिशन केन्द्रों के पास छोड़ जाया करते थे। कुछ इन अनाथ केन्द्रों में इन बच्चों की परवरिश के साथ-साथ धर्म परिवर्तन भी होता था। इस मिशन के द्वारा लड़किया तथा लड़कों के लिए अलग अलग पाठशाला की भी स्थापना की गई ।

शिक्षा के प्रसार के साथ ही स्कूलों की संख्या में वृद्धि की जाती रही। प्रायमरी स्कूल मिडिल स्कूल, तथा मिडिल स्कूल हाई स्कूल में परिवर्तित होता चला गया । वर्तमान में भी उनके द्वारा स्थापित स्कूल तथा होस्टल बर्जेस मेमोरियल गर्ल्स हायर सेकेन्डरी स्कूल तथा बर्जेस मेमोरियल गर्ल्स होस्टल के नाम से जाना जाता है। बर्जेस मेमोरियल गर्ल्स हायर सेकेन्डरी स्कूल का प्रारंभिक नाम चन्दा था ।

प्राथमिक पाठशाला की स्थापना 6 नवंबर 1885 को तीन मिशनरी सुश्री मिस गाब्रिएल, मिस मेरी किंग्सबरी तथा सिउडा स्काड के द्वारा की गई थी । प्रारंभ में इस पाठशाला की संख्या मात्र 16 छात्राओं की थी, जिनकी शिक्षा के लिए एक राजपूत शिक्षक की नियुक्ति की गई थी सन् 1898 में छात्राओं की संख्या 300 तक पहुंच गई थी । अकाल की स्थिति होने के कारण इस पाठशाला के साथ एक अनाथालय भी स्थापित किया गया जिसके लिए अमेरिका से सहायता प्राप्त हुई थी । सन् 1920 में मिसेज ओ. ए. बर्जेस के नाम से एकत्रित किया हुआ धन इस पाठशाला को प्राप्त हुआ फलस्वरूप इसका नाम बर्जेस मेमोरियल कन्या पाठशाला में परिवर्तित हो गया । आगे चलकर यही नार्मल स्कूल की स्थापना की गई।

इस मिशन के द्वारा स्वास्थ्य सेवा का भी कार्य किया गया। उन दिनों स्वास्थ्य सेवा मिशनरी कार्य का एक आवश्यक अंग माना जाता था। इस मिशन के द्वारा प्रारंभ में एक डिस्पेंसरी की स्थापना की गयी। इसकी स्थापना का सही समय ज्ञात नहीं है। अनुमानतः इसकी स्थापना सन् 1885 से 1890 के काल में हुई होगी । बाद में अमेरिका के जैकमेन की याद में प्राप्त धन इस अस्पताल को प्राप्त होने के कारण इसका नाम जैकमेन मेमोरियल क्रिश्चियन अस्पताल हो गया है। सेवा कार्य के साथ साथ धर्म प्रचार का कार्य भी जारी था । कितने लोगों का धर्म परिवर्तन किया गया वह संख्या प्राप्त नहीं है। उस काल में बिलासपुर में भुख तथा अकाल की स्थिति को देखते हुए कहा जा सकता है कि इनकी संख्या हजारों में रही होगी। सन् 1901 में बिलासपुर में ईसाईयों की संख्या 1959 थी। लेकिन यह संख्या सही प्रतीत नहीं होती लेकिन 1885 से 1901 तक मिशन का कार्य काफी विकसित था। सन् 1928 कुदुदण्ड में जमीन खरीदकर चर्च स्कूल तथा बाल आश्रम की स्थापना की गई।

मुंगेली में मिशन का प्रचार:- मुंगेली बिलासपुर जिले के अंतर्गत एक तहसील है। यह बिलासपुर से 31 मील दूर पर आगर नदी के किनारे बसा है। डिसाइपल चर्च ऑफ क्राइस्ट के मिशनरी जबलपुर से बिलासपुर यात्रा के मध्य कुछ समय यहां विश्राम हेतु ठहरे थे । उनकी इच्छा यहां मिशन केन्द्र खोलने की थी परंतु वे जिला मुख्यालय बिलासपुर की ओर प्रस्थान कर गये। सन् 1889 में मिशनरी जी.डबलू.जेक्सन के नेतृत्व में यहां मिशन केन्द्र की स्थापना की गई, यहां एक कन्या प्राथमिक शाला तथा लड़कों की प्राथमिक शाला स्थापित की गयी।

दो अस्पताल, एक चर्च, एक कुष्ठ रोग केन्द्र भी स्थापित किया गया । अकाल की स्थिति के कारण यहां एक अनाथालय की भी स्थापना की गई थी। मुंगेली तहसील सतनामी क्षेत्र होने के कारण आगे चलकर धर्म प्रचार का एक प्रमुख केन्द्र बन गयी । कितने लोगों की इस काल में यहां धर्म परिवर्तन किया गया यह संख्या ज्ञात नहीं है। विदेशी सहायता का प्रचुर उपयोग धर्म प्रचार के लिए किया गया । इस स्थान से आस पास के जंगलों में धर्म परिवर्तित ईसाइयों को बसाने की योजना बनाई गयी । प्रारंभ में पाठशालाओं में छात्रों की संख्या तथा अस्पतालों में मरीजों की संख्या अनुपलब्ध है । यहां से कुछ दुर स्थित फास्टरपुर में ईसाईयों को बसाया गया।

पेन्ड्रारोड में मिशन:- यह बिलासपुर जिले के अंतर्गत 100 किलो मीटर की दूरी पर बिलासपुर कटनी रेल मार्ग के किनारे स्थित हैं । यह जंगल तथा पहाड़ों में घिरा हुआ क्षेत्र है । संभवतः पेन्ड्रा शब्द का निर्माण पण्डारी से हुआ है जो कि डाकुओं का एक दल होता था जिसने उत्तर व मध्य भारत के क्षेत्र में आतंक मचा दिया था । पहले यहां जमींदारी थी। धर्म प्रचार के लिए यह उपयुक्त स्थान था अतः डिसाइपल चर्च ऑफ क्राइस्ट के अंतर्गत सन् 1900 में यहीं मिशन केन्द्र की स्थापना की गई । बाद में यहां प्राथमिक शाला, चर्च तथा स्वास्थ्य केन्द्र की स्थापना की गई । यद्यपि आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, फिर भी उपयुक्त स्थान होने के कारण काफी लोगों के मध्य धर्म प्रचार का कार्य किया गया होगा।

तखतपुर में मिशन:- उस काल में तखतपुर बिलासपुर तहसील मुंगेली की सीमा पर एक गांव था । यह मनियारी नदी के तट पर बसा हुआ है । इसकी स्थापना तखतसिंह नाम हैहयवंशीय राजकुमार ने की थी । जबलपुर से बिलासपुर यात्रा के दौरान मिशनरियों ने यहां पर भी पड़ाव डाला था लेकिन यहां मिशन केन्द्र की स्थापना बहुत बाद के काल में सन् 1923 के आसपास की गई । यहां अनाथालय, स्कूल तथा चर्च की स्थापना की गई । सन् 1917 में ही फॉस्टरपुर में मिशन केन्द्र की स्थापना की गई। जैसा कि नाम से ही ज्ञात होता है जंगल काट कर गांव बसाये जाने के कारण इसका नाम फॉस्टरपुर पड़ा। यह डिसाइपल चर्च ऑफ क्राइस्ट का महत्वपूर्ण केन्द्र है, यहां मुख्यतः धर्म परिवर्तित ईसाइयों को बसाया गया है तथा उनके लिए खेती व शिक्षा की व्यवस्था की गई है । इसके अलावा इस मिशन के अंतर्गत निपनिया मुढ़ीपार, तथा अमोड़ा में भी केन्द्र स्थापित है।

चांपा में मिशन:- यह जांजगीर तहसील के अंतर्गत आता है । यह बिलासपुर कलकत्ता मार्ग पर नैला से बाद का रेल्वे स्टेशन है । यहां मैनोनाइट मिशन अमेरिका ने मिशन कार्य प्रारंभ किया । इस मिशन को स्थापित करने निश्चित सन् प्राप्त नहीं है । लगभग 1900 ई. के आसपास यहां केन्द्र खोला गया होगा। अकाल के कारण मिशन द्वारा अनाथालय की स्थापना की गई । स्कूल तथा चर्च का निर्माण किया गया।

जांजगीर में मिशन:- यह जांजगीर तहसील का मुख्यालय है जो बिलासपुर जिले के अंतर्गत आता है। बिलासपुर-कलकत्ता रेल मार्ग पर नैला स्टेशन से इसकी दूरी 2 मील है। यहां भी अमेरिकन

मैनोनाइट मिशन ने अपना केन्द्र स्थापित किया। अनुमानतः लगभग 1900 ई. के आसपास यहां मिशन केन्द्र खोला गया होगा । यहां भी अकाल की स्थिति के कारण अनाथालय, चर्च तथा पाठशाला की स्थापना की गई । इस मिशन के माध्यम से कितने लोगों का धर्म प्रचार किया गया यह संख्या अज्ञात है।

यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है, कि अमेरिकन मेनोनाइट मिशन ने धमतरी (जिला-रायपुर) में केन्द्र स्थापित करने के बाद रायपुर तथा बिलासपुर को छोड़कर चांपा तथा जांजगीर को अपना केन्द्र बनाया। संभवतः इसका कारण यह था कि इस मिशन का प्रवेश छत्तीसगढ़ में काफी बाद में हुआ । तब तक विभिन्न स्थानों में दूसरे मिशनों के केन्द्र स्थापित हो गये थे । बिलासपुर जिले में तथा चांपा, जांजगीर उपयुक्त तथा अछूते स्थान रहे होंगे।

मिशन स्टेशन सक्ती:- यह भी बिलासपुर जिले के अंतर्गत एक प्रमुख स्थान है । यहां पहले राजवाड़ा था। यहां के मूल निवासियों में गोड़, कोल, गांडा, कंवर इत्यादि प्रमुख है। यहां छत्तीसगढ़ी, उड़िया, हिन्दी तथा अनेक बोलियां बोली जाती है। सक्ती में अमेरिकन एवेंजिकल मिशन ने सन् 1901 में पादरी नुस्समन के नेतृत्व में मिशन केन्द्र की स्थापना की । प्रारंभ में लड़कों की पाठशाला बंगला-प्रचारकों तथा नौकरों का घर बनाया गया। इसके लिए विश्रामपुर तथा बैतलपुर के कारीगर बुलाये गये थे। कुछ समय के बाद लड़कियों के लिए हॉस्टल, डिस्पेंसरी तथा कुछ अन्य घरों का निर्माण किया गया । एक गिरजाघर का भी निर्माण किया गया जिसके बरामदे में प्रारंभ में प्राथमिक पाठशाला लगा करती थी।

आवागमन को सुविधा के अभाव के कारण यहां मिशन को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। संस्थापक पादरी नुस्समन ने सन् 1901 से 1912 तक कार्य किया। उसके पश्चात् पादरी लीन्क ने कार्यभार सम्हाला । इसके अलावा पादरी ए. फायरावेंड, पादरी टी. एच.टवेंटे, पादरी जे. सी. कार्नड पादरी, ई डबलू. मेंजल, ने भी कार्य किया।

इस प्रकार अन्य जिलों की भांति बिलासपुर जिलें में भी प्रोटेस्टेंट मिशनों का फैलाव मुख्यतः पिछड़े क्षेत्रों में हुआ । मिशन कार्यों की ब्रिटिश प्रशासन को सहयोग प्राप्त हुआ ।

बैतलपुर मिशन स्टेशन:- बिलासपुर रायपुर मार्ग पर स्थित बैतलपुर मुंगेली तहसील के अंतर्गत आता है। यह मिशन का एक महत्वपूर्ण केन्द्र है, इसके पूर्व विश्रामपुर में जर्मन एवेंजिकल क्लीसिया की स्थापना सन् 1868 में फादर ओ. टी. लोर के द्वारा हो चुकी थी । इस मिशन का प्रसार छत्तीसगढ़ के विभिन्न क्षेत्रों में जारी था। प्रारंभिक जांच के पश्चात् इस स्थान को मिशन केन्द्र के लिए उपयुक्त पाया गया। बैतलपुर मिशन की स्थापना सन् 1886 में पादरी ए. स्टोल के द्वारा की गई । इस स्थान को प्राप्त करने में पादरी ओ. टी. लोर तथा पादरी ए. स्टोल को काफी कठिनाई का सामना करना पड़ा । क्योंकि आसपास के जमींदार तथा सरकारी अधिकारी इसके विरोधी थे। यहां की जमीन पथरीली होने के कारण यहां का नाम बैतेल रखा गया जो आगे चलकर बैतलपुर हो गया ।

पादरी ए. स्टोल:- पादरी स्टोल ने यहां खद्दर की छावनी से एक बंगला तैयार करवाया इससे लगा हुआ एक कुंआ तथा उपदेशो के लिए कुछ मकान तैयार किये गये । विश्रामपुर से लाये तीन उपदेशों के साथ जिनके नाम मुंशी युसुफ और बनिया नुहती तुम थे। तीसरे का नाम ज्ञात नहीं है ।

इन सबने आसपास के गांवो में धर्म के प्रचार प्रारंभ किया उन्होनें बैतलपुर में बालकों के लिए एक पाठशाला की भी स्थापना की ताकि शिक्षा का प्रसार किया जा सके । लगातार परिश्रम के कारण पादरी ए. स्टोल का स्वास्थ्य खराब हो गया उन्हे विश्राम के लिए छुट्टी दे दी गई। उनके स्थान पर पादरी जे. जोस्ट को रायपुर से भेजा गया।

पादरी जे. जोस्ट के कार्य:- इनका आगमन सन् 1888 में बैतलपुर में हुआ । इन्होनें आसपास के गाँवों की यात्रा कर धर्म प्रचार का कार्य प्रारंभ किया। उनके प्रयासों के सामूहिक धर्म परिवर्तन का कार्य प्रारंभ हुआ। सतनामियों के अनेक गांव के गांव ईसाई धर्म स्वीकार करने लगे।

सामूहिक ईसाई धर्म स्वीकार करने वाले गांवों में सम्बलपुरी, डिधोरा, धरदेई, कांपा, लाती, घुटिया, चन्द्रखुरी, सोनिका, टेमरी का नाम उल्लेखनीय है । इस धर्म परिवर्तन में छत्तीसगढ़ के अकाल का भी महत्व पूर्ण प्रभाव रहा होगा। पादरी जे. जोस्ट ने बैतलपुर में लड़कियों के एक स्कूल की भी स्थापना की तथा गिरजाघर का निर्माण करवाया। उनके जाने के पूर्व बैतलपूर में धर्म परिवर्तित ईसाईयों का एक गांव बस गया था। जलवायु प्रति कूलता तथा अत्याधिक परिश्रम के कारण उन्हें सन् 1897 में स्वदेश जाना पड़ा। उनके स्थान पर पादरी के. डबलू. नोतरोत को भेजा गया।

पादरी नोतरोत के कार्य:- बैतलपुर आने के पूर्व पादरी नोतरोत ने विश्रामपुर में पादरी लोर के संरक्षण में हिन्दी का ज्ञान प्राप्त किया था। सन् 1897 में भीषण अकाल के कारण अनेक लोग कुष्ट रोग के शिकार हो गये थे । पादरी नोतरोत ने इनकी सेवा की व्यवस्था की तथा उनके लिए रोटी कपडा और मकान की व्यवस्था की गई। कुछ समय के बाद चन्द्रखुरी कुष्ठ आश्रम की स्थापना की गई पहले चन्द्रखुरी के मालगुजार ने अपने क्षेत्र के निकट कोढ़ी खाना बनाने देने से इंकार कर दिया था लेकिन बाद में वह बैतलपुर की सीमा की जमीन बेचने को तैयार हो गया। वर्तमान कोढ़ीखाना इसी स्थान पर बना हुआ है। चन्द्रखुरी की सीमा में होने के कारण इसे चन्द्रखुरी कोढ़ीखाना भी कहा जाता है । एक दान देने वाली रानी के निवेदन पर इस कोढ़ी खाने का नाम उसके पुत्र के नाम पर क्लायर कोढ़ी खाना भी रखा गया था । जो इस केन्द्र के फाटक के खंभों में लिखा हुआ है। बाद मे मिशन टू लेपर्स इन लंदन ने इस संस्था का भार वहन किया। अमेरिकन सुपरिनटेन्डेन्ट, डॉक्टर, रजिस्टर्ड नर्स, आदि की नियुक्ति सेवा के लिए की गई । सन् 1904 में कोढ़ियों की संख्या 400 थी। पादरी नोतरोत के काल में प्रायमरी स्कूल की संख्या तीन हो जाने के कारण मिस्टर पी. डबलू. गार्टलिव को संयुक्त प्रान्त से बुलाकर स्कूल का कार्य सौंपा गया ।

अन्य मिशनरियां:- सन् 1904 में पादरी नोतरोत के स्वदेश जाने पर पादरी एच. एच. लोहांस पादरी, जी. टिलमन, पादरी अन्डरसन, पादरी एम. पी. डेविस, पादरी कोनिंग, पादरी जे. एच. शुल्टज इत्यादि ने कार्य किया । इनके काल में एक अस्पताल तथा लड़के लड़कियों के लिए बोर्डिंग की स्थापना की गई, सेवा सुसमाचार के द्वारा धर्म परिवर्तन का कार्य जारी रहा। बैतलपुर का कुष्ट रोग केन्द्र सेवा का महत्वपूर्ण स्थान बना हुआ है। आज भी दूर दूर स्थानों से कुष्ट रोगी यहां इलाज के लिए आते हैं। बैतलपुर में कितने लोगों ने धर्म परिवर्तन किया यह संख्या ज्ञात नहीं है फिर भी यह कहा जा सकता है कि हजारों लोगों ने धर्म परिवर्तन किया होगा।

बिलासपुर जिले में कैथोलिक मिशन:- मध्यप्रदेश में रोमन कैथोलिक मिशन का प्रवेश काफी पहले हो चुका था। विशेषकर जशपुर, जबलपुर, सागर इत्यादि का क्षेत्र इनके प्रमुख केन्द्र थे प्रोटेस्टेंट मिशन की स्थापना में बिलासपुर में इनके प्रवेश की कोई निश्चित तिथि स्वीकार नहीं की जा सकती। अनुमानतः इनका भी प्रवेश लगभग 1885 से 1890 के आसपास हुआ होगा।

प्रारंभिक इतिहास:- सन् 1821 में नागपूर के पास कामठी नामक स्थान पर एक ब्रिटिश सैनिक छावनी की स्थापना की गई। इस छावनी में आयरिश कैथोलिक तथा दक्षिण भारत के तमिल-तेलगु सिपाही थे। सन् 1857 के गदर के कारण अंग्रेजों का भारतीय सैनिकों

पर विश्वास नहीं था। भारतीय सैनिकों की छटनी की गई। फलस्वरूप कामठी का सैनिक शिविर थी इससे प्रभावित हुआ। सेवामुक्त सैनिकों के अलावा कैथोलिक धर्मावलंबी रेल्वे तथा अन्य सरकारी कर्मचारियों ने कार्यमुक्ति के पश्चात् अपने गृह स्थानों में न जाकर छत्तीसगढ़ के बिलासपुर, रायपुर, दुर्ग तथा राजनांदगांव में ही बसना उपयुक्त समझा। इस प्रकार दक्षिण भारतीय तमिल तथा ऐंग्लोइंडियन को छत्तीसगढ़ का प्रारंभिक कैथोलिक माना जा सकता है।

मराठों के शासन काल में बिलासपुर का कोई विशेष महत्व न था। लेकिन मराठों के पतन के बाद अंग्रेजी शासन काल मे बिलासपुर के महत्व में वृद्धि हो गई । सन् 1861 में बिलासपुर को जिला मुख्यालय बनाया गया। संभवतः बिलासपुर में आने वाले प्रथम पादरी एक फ्रान्सीसी थे जिनका नाम जे. बुटे. था। उन्होंने बिलासपुर की यात्रा विशाखापट्टनम से वर्धा तक की। यात्रा बैलगाड़ी के द्वारा चांदा, सिवनी, बालाघाट, मण्डला होते हुए पूरी की थी। यात्रा में उनके साथ दूध के लिए बकरी तथा अंडे के लिए मुर्गियां थी। अनवरत यात्रा के कारण जे. बुटे. अस्वस्थ हो गये तथा सन् 1886 में उनकी मृत्यु हो गई। उनके पश्चात् पादरी बोजन ने बिलासपुर सहित छत्तीसगढ़ के विभिन्न स्थानों में कार्य जारी रखा यद्यपि इनके काल की गतिविधियों का स्पष्ट इतिहास प्राप्त नहीं होता, फिर भी यह कहा जा सकता है उन्होनें धर्म प्रचार के क्षेत्र में कैथोलिक धर्म का स्थान विशिष्ट बनाने का प्रयास किया होगा। सन् 1897 में नागपुर को कैथोलिक मिशन का प्रचार केन्द्र बनाया गया । जिसमें रायपुर के साथ बिलासपुर भी सम्मिलित कर लिया गया। इस काल में सेन्ट फ्रान्सिसको मिशनरी सोसायटी की अनेक पादरियों ने बिलासपुर में कार्य किया। जिनमें प्रमुख पादरी क्रोन्टचेट थे उन्हें ही बिलासपुर में रोमन कैथोलिक कलीसिया का संस्थापक माना जा सकता है।

सेक्रेड हार्ट चर्च की स्थापना:- सन् 1897 में बिलासपुर अकाल का शिकार था। अनेक प्रोटेस्टेन्ट मिशनरियों ने यहां अपने अनाथालय स्कूल तथा अन्य केन्द्रों की स्थापना की थी, कैथोलिक मिशन के लिए यह काल संघर्ष पूर्ण था । पादरी फान्सिस क्रोटचेट ने रेल्वे क्षेत्र में 200 ग् 200 वर्ग फीट का जमीन प्राप्त किया जिसमें सन् 1903 में सेक्रेड हार्ट चर्च की स्थापना की गई । बिलासपुर के कैथोलिक धर्मावलंबियों ने इसके लिए 500/- एकत्रित कर दान दिया था। उस काल में बिलासपुर में कैथोलिक धर्म मानने वाले मुख्यतः ऐंग्लो इंडियन, रेल्वे कर्मचारी तथा विभिन्न घरों में काम करने वाले दक्षिण भारतीय रसोइये तथा पदमुक्त सैनिक व कर्मचारी थे। ऐसा प्रतीत होता है कि चूंकि ये कर्मचारी दक्षिण भारत के थे अतः भारत में कैथोलिक धर्म के अत्याधिक फैलाव का इन पर प्रभाव रहा होगा। फलतः उनका आकर्षण प्रोटेस्टेन्ट धर्म की ओर न होकर कैथोलिक धर्म की ओर था। अतः कैथोलिक चर्च स्थापित करने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

इस चर्च के निर्माण में 6728 रूपये मात्र खर्च हुये थे। बिलासपुर के लोक निर्माण विभाग के उप संभागीय अधिकारी श्री डेसमोंड ने इसकी देखरेख की थी। प्रारंभ में रायपुर, दुर्ग, डोंगरगढ़, राजनांदगांव, पेन्ड्रारोड, शहडोल, उमरिया का केन्द्र बिलासपुर से हो संचालित था । लेकिन 23.04.1911 को इसे अन्य केन्द्रों से अलग कर दिया गया। फ्रान्सिस जे. एफ. डी. कोस्टा इस स्वतंत्र चर्च के प्रथम पादरी थे। धीरे धीरे खर्च की जमीन में वृद्धि होती गई तथा कैथोलिक मिशन का विकास होता गया।

विभिन्न कार्य:- इस मिशन का प्रमुख उद्देश्य प्रभु ईशु के उपदेशों का प्रसार करना था। लेकिन उनका तत्कालीन उद्देश्य लोगों की दशा सुधारना था। भाषा की समस्या के समाधान के लिए स्थानीय भाषा का अध्ययन किया गया। धीरे धीरे सामाजिक कार्यों में वृद्धि होने लगी फल स्वरूप होस्टल, कैम्प, शैक्षणिक केन्द्र तथा अस्पताल स्थापित होते चले गये । राहत कार्य, स्वावलंबन कार्य, कृषि कार्य इत्यादि की स्थापना की जाने लगी। शिक्षा के क्षेत्र में सहशिक्षा पर विशेष जोर दिया गया। बिलासपुर जिले में इनकी सात प्राथमिक पाठशाला तथा तीन उच्चतर माध्यमिक शालायें स्थापित की गई। जिनमें प्रमुख भारत माता हायर सेकेण्डरी इंगलिश मीडियम स्कूल, भारत माता हायर सेकेन्डरी स्कूल हिन्दी मीडियम तथा सेन्ट जोसेफ कन्या उच्चतर माध्यमिक शाला प्रमुख थे। स्वास्थ्य संबंधी कार्यो के अंतर्गत बिलासपुर में विदेशी सहायता से सुसमिति निवास नामक अस्पताल की स्थापना की गई। इसके अलावा गांवों में अनेक हेल्थ सेंटर स्थापित है । साथ ही समय समय पर अनेक हेल्थ केम्प आयोजित किये जाते रहे हैं ।

यहां के ईसाई समुदाय को विशेष भर्ती के साथ प्रोटेस्टेन्टों के विवाह की अनुमति दी जाती है । प्रोटेस्टेन्ट तथा कैथोलिक दोनों के बीच आपसी भेदभाव के लिए छत्तीसगढ़ मसीही समाज की स्थापना की गई । इनके चर्च संगठन में निम्न पदाधिकारियों की प्रधानता रही।

1. पोप
2. कार्डिल्स
3. बिशप
4. फादर
5. साधारण लोग।

इनमें स्त्रियों को भी माना जाता है। अतः उन्हें चर्च कार्यों में संलग्न नहीं किया जाता, फादर तथा सिस्टर विवाह नहीं कर सकते। ईसाईयों को रोमन न्यायिक कानून को मानना पड़ता है। वर्तमान में जयरामनगर, माल खरौद, कोरबा, रिसदा आदि स्थानों मे इनके केन्द्र है ।

संदर्भ सूची:

1. Report of the Christian Missionary Activities Enquiry Committe, Madhya Pradesh, Part-A, Nagpur, 1956, II.
2. अरूण शौरी-भारत में ईसाई धर्म प्रचार तंत्र-निरतंरताएं, परिवर्तन, सुविधाएं, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, 2004, पृ.214-216, 220-222
3. वी. बेली गिलेस्पी, धार्मिक रूपांतरण और व्यक्तिगत पहचान (बर्मिंघम-धार्मिक शिक्षा प्रेस, 1988) 16.
4. आर्थर डार्बी नॉक, धार्मिक परिवर्तन में धर्मांतरण के एक सामान्य सिद्धांत की ओर धर्मांतरण और संस्कृति मेंलिनेट ओलसम, एड. (सिडनी- एसएएसएससी, 1986)-3-14
5. तारा चंद, भारतीय लोगों का संक्षिप्त इतिहास (कलकत्ता-मैकमिलन एंड कंपनी लिमिटेड, 1934) 64-65.